आलस्य और अलबेलापन - 24

अव्यक्त बापदादा :- (17. 12. 1979)

➳ _ ➳ माया भी बड़ी चतुर है। विशेष उस समय बाप से किनारे करने के लिए आ जाती है। विशेष बहाने बाज़ी के खेल में बच्चों को रिझा लेती है। जैसे बाज़ीगर अपनी बाज़ी में लोगों को आकर्षित कर लेते हैं, वैसे माया भी अनेक प्रकार के अलबेलेपन, आलस्य और व्यर्थ संकल्पों की बहाने बाज़ी में रिझा लेती है। इसलिए गोल्डन चान्स को गवा लेते हैं। और फिर ऐसे समय को गवाने के कारण सहज प्राप्ति से वंचित होने के कारण सारा दिन का कमजोर फाउन्डेशन हो जाता है।

➳ _ ➳ सारे दिन में चाहे कितना भी पुरूषार्थ करें लेकिन सारे दिन की आदि अर्थात फाउन्डेशन समय कमज़ोर होने के कारण मेहनत ज्यादा करनी पड़ती, प्राप्ति कम होती हैं। प्राप्ति कम होने के कारण दो प्रकार की अवस्था का अनुभव करते हैं। एक तो चलते-चलते थकावट अनुभव करते हैं, दूसरा चलते-चलते दिल शिकस्त हो जाते हैं और फिर क्या सोचते हैं। ना मालूम मंजिल पर कब पहुँचेंगे? समय नज़दीक है या दूर है? कब प्रत्यक्षता होगी और सतयुगी सृष्टि में जावेंगे? यह प्रवृत्ति के बन्धन कब तक रहेंगे? वर्तमान की प्राप्ति को छोड़ भविष्य को देखते हैं।

➢➢ अमृतवेले के समय माया बाप से किनारे करने के लिए आ जाती है

➳ _ ➳ अमृतवेला कमजोर है तो किस प्रकार की अवस्था का अनुभव करते हैं

→ **मेहनत ज्यादा, प्राप्ति कम**

→ **ख़ुशी नहीं रहती**

→ चिडचिडापन

→ सेंसिटिव, दुखी, अपसेट हो जाना

→ **लाइन क्लियर नहीं होगी**

→ व्यर्थ संकल्प आयेंगे

→ कैचिंग पॉवर, टचिंग पॉवर नहीं होगी

→ **विकारों का आक्रमण होगा**

→ सफलता का अनुभव नहीं होगा

→ **पुराने संस्कारों का आक्रमण**

→ शक्ति कम हो जाएगी

→ बैटरी डिस्चार्ज होगी

→ स्थिति कभी भी गिर सकती है

→ **चलते-चलते थकावट का अनुभव**

- सेवा में व्यर्थ बातें थकाते हैं
- परचिन्तन, परदर्शन, परमत से
- ईर्ष्या, नफरत, Critisism से

- घृणा, आलोचना, निंदा, विरोध से

→ चलते-चलते दिल शिकस्त हो जाते हैं

- उदासी
- हार, अवसाद
- किसी काम में मन ना होना
- सोने का दिल होना

→ फिर प्रश्न पूछते हैं -

- मंजिल पर कब पहुँचेंगे?
- कब प्रत्यक्षता होगी और सतयुग में जावेंगे?
- यह प्रवृत्ति के बन्धन कब तक रहेंगे?

→ वर्तमान की प्राप्ति को छोड़ भविष्य को देखते हैं

→ **गोल्डन चांस को गँवा लेते हैं**

- **जीवन में उदासी, दुःख है मतलब अमृतवेला कमजोर है**

➢➢ अमृतवेला कौन-कौन सी चीजें करनी है उसकी चेक लिस्ट

➳ _ ➳ **हर दिन इतनी बातें होनी चाहिए, रोज चेक करना है, रोज ये कार्य करना ही है**

→ पहले Good Morning

→ स्वमान का अभ्यास

- मैं कौन सी आत्मा हूँ
- मेरे सामने कौन खड़ा है

→ **आत्मिक स्वरुप में स्थित होना**

→ फिर आत्मा के ऊपर चिन्तन

- मैं कौन हूँ- आत्मा हूँ
- **कैसी हूँ- ज्योतिबिंदु, point of light हूँ**
- कहाँ हूँ- भृकुटी के मध्य में हूँ
- देह से अलग हूँ
- देह को चलाने वाली हूँ
- आँखों से देखने वाली
- कानों से सुनने वाली
- मुंह से बोलने वाली
- **इस शरीर का सम्पूर्ण संचालन करने वाली आत्मा हूँ**
- मैं अलग हूँ, ये चेतन है, ये जड़ है
- **तत्व में विलीन हो गया है शरीर**
- केवल बच गई एक आत्मा

→ सूक्ष्म शरीर के साथ अब आकाश में सूरज, चाँद, सितारों के ऊपर अंतरिक्ष में

→ सौरमंडल के ऊपर, और ऊपर सूक्ष्म वतन में पहुँच गई

→ सूक्ष्म वतन में सामने बापदादा

- **आँखों से पवित्रता की किरणें निकल मुझ आत्मा में समा रही है**
- भृकुटी से शक्तियां निकल मुझ आत्मा में समा रही है
- **बापदादा ने वरदानी हाथ रख दिया**
  - सम्पूर्ण ज्ञान दे दिया
  - गुण, शक्तियां भर दी
  - जो चाहिए वो
- **भगवान तिलक दे रहा है-**
  - **सदा विजयी भव - विकारों पर विजय**
  - **सफलतामूर्त भव - दिनभर की सेवाओं में**
  - **निर्विघ्न भव, विघ्न विनाशक भव**
  - **<u>बाप समान सम्पूर्ण कर्मयोगी, फ़रिश्ता भव</u>**
- **सर्व संबंधों का अनुभव**
  - **माँ, बाप, भाई-बहन, दोस्त, शिक्षक, मार्गदर्शक, गाइड, गुरु**

→ अब सूक्ष्म शरीर भी सूक्ष्म वतन में छोडकर आत्मा ऊपर परमधाम में

- निराकारी स्थिति का अनुभव
  - **मैं निराकारी दुनिया में हूँ**
  - **चारों तरफ निराकारी आत्माएं हैं**
  - **तो मैं भी निराकारी आत्मा हूँ**
- निर्विकारी स्थिति
  - मैं निर्विकारी दुनिया में हूँ
  - सभी निर्विकारी आत्माएं हैं
  - तो मैं भी निर्विकारी आत्मा हूँ
- ब्रह्म लोक में हूँ
  - चारों तरफ ब्रह्म है
  - मैं ब्रह्म में हूँ
  - आत्मा ब्रह्म में है
  - आत्मा चेतन है, ब्रह्म जड है
- मैं निर्वाणधाम में हूँ
  - कोई आवाज नहीं है

- **कोई संकल्प नहीं, बोल नहीं, कोई कर्म नहीं**
- निस्तबधता, निशब्दता, निरवता, खमोशी

- ज्ञान सूर्य सामने है
  - **ज्ञान सूर्य की सम्पूर्ण ज्ञान की किरणें मुझमें आ रही हैं**
- मैं शांतिधाम में हूँ
  - शांतिधाम की सम्पूर्ण शांति मुझ आत्मा में समा रही हैं
  - सर्वशक्तिवान की सर्व शक्तियों की किरणें मुझमे आ रही है
- **<u>परमधाम में लम्बे समय तक बीजरूप स्थिति में होने का अभ्यास</u>**
  - आत्मा के 7 गुणों में स्थित होना

→ अब मैं आत्मा परमधाम को छोड़ स्वर्ग में हूँ

- सम्पूर्ण सतयुग, त्रेता का अनुभव
- 8 जन्म, 12 जन्म, 2500 वर्ष
- सम्पूर्ण देही-अभिमानी हूँ
- 16 कला सम्पूर्ण
- सम्पूर्ण निर्विकारी हूँ

→ फिर मैं आत्मा द्वापर में हूँ

- **पूज्य स्वरुप की विधिपूर्वक पूजा कर रहे हैं**
- एक-एक देवी का स्वरुप का अनुभव
  - लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, काली, संतोषी, वैष्णवी देवी
  - हनुमान, गणेश
- भक्तों की कतार लगी हुई है
- भक्तों को वरदान, आशीर्वाद, मनोकामनाएं, मन्नतें पूरा करना

→ फिर संगम पर

- प्राप्तियों का अनुभव
- कौन मिला, कैसे मिला, क्यों मिला
- पहले क्या थे, अब क्या हैं
- **संगमयुग के गीत गाना, मौज मनाना**
- संगमयुग का वर्सा
- परमात्म प्यार, परमात्म मिलन, परमात्म प्राप्ति
- **वो घडी जब वो मिला उसका स्मरण**
- स्वयं के जीवन को देखना

- कहाँ-कहाँ उसने मदद की
- **प्राप्तियों की लिस्ट, वरदानों की लिस्ट, अधिकार की लिस्ट, भाग्य की लिस्ट**
- संगमयुगी ब्राह्मण हूँ
- **ब्राह्मण बनते ही पवित्रता का वरदान मिला**
- सर्व संबंधों का फिर से अनुभव

→ फिर इस तन को छोड़ फ़रिश्ता बनकर आकाश में

- **अन्तःवाहक शरीर द्वारा प्रकृति को पावन करना**
- संकल्प करना- मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ
- फिर आकाश में स्थित होकर सकाश देना
  - सम्पूर्ण आकाश, सूरज, चाँद, ग्रहों, नक्षत्रों को
- उतरते-उतरते वायु को सकाश
- **फिर धरती पर पैर हैं और पैरों से सकाश निकल रही है**
  - सम्पूर्ण ग्लोब को
- पांचों महाद्वीप को
  - सम्पूर्ण यूरोप के जमीन और सर्व आत्माओं को
  - अमेरिका- उत्तर और दक्षिण अमेरिका
  - अफ्रीका
  - सम्पूर्ण एशिया को
  - अंटार्कटिका
- पांच महासागर
  - हिन्द महासागर
  - अटलांटिक महासागर
  - प्रशांत महासागर
  - दक्षिण महासागर
  - आर्टिक महासागर
- अग्नि
- दुखी आत्माओं को सुख की किरणें
- अशांत आत्माओं को शांति की किरणें
- अपवित्र आत्माओं को पवित्रता की किरणें
- रोगी आत्माओं को पवित्रता की किरणें
- असंतुष्ट आत्माओं को संतुष्टता की किरणें
- भक्त आत्माओं को इमर्ज करना
  - जो ज्ञान में नहीं आए उनका आह्वान
  - भगवान आ गए हैं

- पूरे शहर को सकाश
- सम्पूर्ण भारत को सकाश
- तीन सत्ता-
  - धर्म सत्ता- सभी साधू, सन्यासी, योगी, तपस्वी, महात्मा, भक्त
  - राज्य सत्ता- राजनेताओं को
  - विज्ञान सत्ता- सभी वैज्ञानिक
- विश्व भर के अस्पताल
  - सभी रोगी, उनके रिलेटिव्स
  - चिकित्सक
- वेश्याओं को
- ब्राहमण समाज
  - **अपने असंख्य फ़रिश्ता स्वरुप धारण करना**
  - हर सेण्टर की संदली पर जाकर बैठना
  - सामने बहनें, पीछे सभी भाई-बहनों को सकाश
  - संकल्प - मैं परम पवित्र आत्मा हूँ- पावन बनाना है
  - मैं विघ्न विनाशक आत्मा हूँ- इस सेण्टर के सभी विघ्न समाप्त हो गए हैं
- मधुबन
  - शांतिवन के ऊपर, फ़रिश्ता रूप धारण कर जो भी कांफ्रेंस में आ रहे हैं, शिविर में, वहां के रहवासी, सेवाधारी सबको पवित्रता की सकाश
  - ज्ञान सरोवर, पीस पार्क, म्यूजियम, संगम भवन, अस्पताल, सबको पवित्रता की किरणें
  - पांडव भवन- जो अमृतवेला कर रहा है, जो सो रहा है उसको भी सकाश
  - सम्पूर्ण आबू को सकाश
  - जो यहाँ रहते पर भगवान को नहीं जाना उनको सकाश
  - **सारे ब्राहमण परिवार को सकाश**
- जन्म-जन्म या इस जन्म में जिनको हमने दुःख दिया है
  - **उनसे क्षमा प्रार्थना**
- जन्म-जन्म या इस जन्म में जिन्होंने हमें दुःख दिया है
  - **उनको क्षमा कर दो**
- जन्म-जन्म से जिन्होंने हमें सहयोग दिया है, पुरुषार्थ में या किसी भी चीज में

- **उनको धन्यवाद**

  - माँ-बाप, लौकिक परिवार ज्ञान में नहीं तो उनको सकाश